बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एक प्रमुख उत्पाद दंत-मंजन आजकल विज्ञापन की दुनियां में छाये रहते हैं । कृत्रिम उत्पादनों की इस चकाचौंध के समान्तर गरीब बच्चों ने बबूल की दातून बेचने का धंधा ईजाद किया है । स्कूल से कटे नामों वाले इन बच्चों ने वर्तमान को एक देशज संदर्भ प्रदान किया है ।

दातून बेचने वाले बच्चे

❑ एकांत श्रीवास्तव

इस निर्जन में
तोड़ रहे हैं बबूल की टहनियां
पेड़ पर चढ़े बच्चे

जब टूट जाएंगी जरूरत-भर टहनियां
वे उतरेंगे, झीनी छांह में बैठकर
सुस्ताएंगे थोड़ी देर
फिर उठाएंगे हंसिए और टहनियों से
अलग कर देंगे कांटे और पत्तियां

कल वे जाएंगे शहर
सोमवारी हाट में
बेचने अपने दातून

इस तरह अपनी ताकत भर
वे बचा रहे हैं उस धुएं को
जो सुबह-शाम उठता है
उनके घरों की खपरैलों से

खा गई हैं दीमकें
उनके हिस्सों की किताबें
स्कूल में दर्ज होने से पहले
कट गए हैं उनके नाम

खुशी एक फूल का नाम है
जिसके लिए वे दोपहर भर
जूझते रहते हैं काटों से

अंधेरा घिरते ही
दातून का गट्ठर उठाए
वे लौटते हैं घर

उस पार
आम के बगीचे में
उनके इंतजार में टिमटिमाता है
दिया-बाती वाला गांव । ◆